शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी-मार्च 2026
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राजस्थान एवं दिल्ली में दो वर्षीय बी.एड. इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की तुलनात्मक स्थिति : एक बहु-अभिधारक विश्लेषण

प्रियंका मीना (शोधार्थी) शिक्षा संकाय
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
डॉ. खीमाराम काक (शोध निर्देशक)
सहायक प्राध्यापक
विद्या भवन जी.एस. शिक्षक महाविद्यालय
उदयपुर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य राजस्थान एवं दिल्ली में संचालित दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के अंतर्गत इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की तुलनात्मक स्थिति का बहुअभिधारक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। इंटर्नशिप कार्यक्रम शिक्षक-शिक्षा का एक केंद्रीय घटक है, जहाँ सैद्धांतिक ज्ञान का रूपांतरण व्यावहारिक दक्षताओं में होता है। अतः इसके कार्यान्वयन की वास्तविक स्थिति का परीक्षण शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता को समझने के लिए आवश्यक है। अध्ययन वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है। शोध में छात्राध्यापक, शिक्षक एवं प्राचार्य - तीनों अभिधारकों को सम्मिलित किया गया। छात्राध्यापकों (N = 320) एवं शिक्षकों (N = 300) से प्रश्नावली के माध्यम से दत्त संकलित किए गए, जबकि प्राचार्यों (N = 40) से अर्ध-संरचित साक्षात्कार के द्वारा गुणात्मक दत्त प्राप्त किए गए। मात्रात्मक दत्तों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण के माध्यम से किया गया, जबकि प्राचार्य-साक्षात्कारों का विश्लेषण थीमेटिक पद्धति से किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि इंटर्नशिप कार्यक्रम का कार्यान्वयन दोनों राज्यों में औसत से ऊपर की स्थिति में है तथापि राज्यवार अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। छात्राध्यापक स्तर ($t = 2.71$, $p < 0.05$) तथा शिक्षक स्तर ($t = 3.04$, $p < 0.05$) पर दिल्ली की स्थिति राजस्थान की तुलना में अधिक सुदृढ़ पाई गई। प्राचार्य-आधारित गुणात्मक विश्लेषण से भी योजना की औपचारिकता, विद्यालय-महाविद्यालय समन्वय तथा संसाधनों की उपलब्धता में राज्यवार भिन्नता परिलक्षित हुई। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यद्यपि दोनों राज्यों में इंटर्नशिप कार्यक्रम संरचनात्मक रूप से लागू है तथापि उसके संगठनात्मक नियंत्रण, प्रशासनिक स्पष्टता एवं कार्यान्वयन की एकरूपता में अंतर विद्यमान है। यह अध्ययन शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता-सुधार की दिशा में नीतिगत एवं व्यावहारिक संकेत प्रदान करता है।

कुंजी शब्द : *बी.एड. इंटर्नशिप, कार्यान्वयन, तुलनात्मक अध्ययन, बहु-अभिधारक विश्लेषण, शिक्षक-शिक्षा*

प्रस्तावना

शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में इंटर्नशिप वह चरण है जहाँ प्रशिक्षणार्थी को वास्तविक विद्यालयी परिवेश में कार्य करने का अवसर मिलता है। दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप को केवल औपचारिक आवश्यकता के रूप में नहीं, बल्कि व्यावसायिक दक्षताओं के विकास की अनिवार्य प्रक्रिया के रूप में

स्थापित किया गया है। कक्षा-शिक्षण, पाठ-योजना निर्माण, विद्यार्थियों से संवाद, विद्यालयी अनुशासन, अभिलेख-निर्माण तथा मूल्यांकन जैसी गतिविधियाँ प्रशिक्षणार्थी को शिक्षक की वास्तविक भूमिका से परिचित कराती हैं। इस प्रकार इंटर्नशिप शिक्षक-शिक्षा के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक आयामों के बीच सेतु का कार्य करती है।

यद्यपि इंटर्नशिप कार्यक्रम की संरचना राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित मानकों के अनुरूप होती है तथापि उसके कार्यान्वयन की गुणवत्ता प्रायः राज्यवार एवं संस्थानवार भिन्न पाई जाती है। संसाधनों की उपलब्धता, विद्यालय-महाविद्यालय समन्वय, पर्यवेक्षण की नियमितता, दस्तावेज़ीकरण की प्रक्रिया तथा मूल्यांकन की स्पष्टता जैसे कारक कार्यक्रम की प्रभावशीलता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। इस संदर्भ में राजस्थान एवं दिल्ली जैसे दो भिन्न शैक्षिक परिवेशों में संचालित बी.एड. इंटर्नशिप कार्यक्रम की तुलनात्मक समीक्षा प्रासंगिक हो जाती है।

पूर्ववर्ती अध्ययनों में इंटर्नशिप के महत्व, चुनौतियों एवं अभिधारकों के प्रत्यक्षणों पर चर्चा की गई है, किंतु कार्यान्वयन की वास्तविक स्थिति का बहु-अभिधारक दृष्टिकोण से तुलनात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी अंतर को संबोधित करता है। इसमें छात्राध्यापक, शिक्षक एवं प्राचार्य - तीनों स्तरों से प्राप्त दत्तों के आधार पर यह विश्लेषण किया गया है कि दोनों राज्यों में इंटर्नशिप कार्यक्रम का कार्यान्वयन किस सीमा तक प्रभावीए संगठित एवं संतुलित है।

इस अध्ययन का मूल प्रश्न यह है कि क्या राजस्थान एवं दिल्ली में इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति समान है अथवा उसमें कोई सार्थक अंतर परिलक्षित होता है। इस प्रश्न का उत्तर न केवल तुलनात्मक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता, नीति-निर्माण तथा संस्थागत समन्वय के लिए भी उपयोगी संकेत प्रदान करता है।

अध्ययन के उद्देश्य एवं परिकल्पना

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य राजस्थान एवं दिल्ली में संचालित दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के अंतर्गत इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। इस व्यापक उद्देश्य को स्पष्ट करने हेतु निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित किए गए :

1 छात्राध्यापकों के दृष्टिकोण से इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति का अध्ययन करना

2 शिक्षकों के दृष्टिकोण से इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति का विश्लेषण करना

3 प्राचार्यों के दृष्टिकोण से इंटर्नशिप कार्यक्रम के प्रशासनिक एवं संस्थागत कार्यान्वयन की स्थिति को समझना।

4 राजस्थान एवं दिल्ली में इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति का तुलनात्मक परीक्षण करना

शून्य परिकल्पना

अध्ययन के तुलनात्मक स्वरूप को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित शून्य परिकल्पना का परीक्षण किया गया :

H_{01} : राजस्थान एवं दिल्ली में संचालित दो वर्षीय बी.एड. इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

शोध की प्रकृति एवं रूपरेखा

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। इसका उद्देश्य राजस्थान एवं दिल्ली में संचालित दो वर्षीय बी.एड. इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की वास्तविक स्थिति का विश्लेषण करना तथा दोनों राज्यों के बीच विद्यमान अंतर की जाँच करना था।

अध्ययन में मात्रात्मक एवं गुणात्मक - दोनों प्रकार के दत्तों का उपयोग किया गया। छात्राध्यापक एवं शिक्षक स्तर पर प्रश्नावली आधारित दत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गयाए जबकि प्राचार्य स्तर पर अर्ध-संरचित साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का थीमेटिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। इस प्रकार अध्ययन की रूपरेखा बहु.अभिधारक एवं मिश्रित प्रविधि पर आधारित रही।

न्यादर्श

अध्ययन में राजस्थान एवं दिल्ली के छात्राध्यापक, शिक्षक तथा प्राचार्य - तीनों अभिधारकों को सम्मिलित किया गया। तुलनात्मक विश्लेषण की दृष्टि से दोनों राज्यों से संतुलित न्यादर्श का चयन किया गया। न्यादर्श का वितरण निम्न सारणी में प्रस्तुत है :

सारणी 1

न्यादर्श का राज्यवार एवं अभिधारकवार वितरण

अभिधारक	राजस्थान	दिल्ली	कुल
छात्राध्यापक	160	160	320
शिक्षक	150	150	300
प्राचार्य	20	20	40
कुल	330	330	660

सारणी से स्पष्ट है कि अध्ययन में कुल 660 अभिधारकों को सम्मिलित किया गया, जिनमें दोनों राज्यों का समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया। इस संतुलित संरचना के कारण राज्यवार तुलनात्मक विश्लेषण अधिक विश्वसनीय रूप में संभव हुआ।

उपकरण

अध्ययन में स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग किया गया :

1 छात्राध्यापक प्रश्नावली : इसमें इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन से संबंधित प्रमुख क्षेत्रों - प्री-इंटर्नशिप तैयारी, शिक्षण-अभ्यास, विद्यालयी गतिविधियाँ, पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन, दस्तावेज़ीकरण तथा मूल्यांकन को सम्मिलित किया गया।

2 शिक्षक प्रश्नावली : इसमें विद्यालय समन्वय, छात्राध्यापकों की तैयारी, निरीक्षण प्रक्रिया, दस्तावेज़ीकरण एवं प्रशासनिक सहयोग से संबंधित कथन सम्मिलित किए गए।

3 प्राचार्य अर्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची : इसके माध्यम से योजना, समन्वय, संसाधन-उपलब्धता, प्रशासनिक प्रवृत्तियाँ एवं कार्यान्वयन से संबंधित अनुभव संकलित किए गए।

प्रश्नावलियों में पाँच बिंदु लिकर्ट प्रकार का मानक प्रयुक्त किया गया।

दत्त विश्लेषण की प्रविधियाँ

मात्रात्मक दत्तों के विश्लेषण हेतु निम्न प्रविधियों का उपयोग किया गया :

प्रतिशत

मध्यमान

मानक विचलन

स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण

गुणात्मक दत्तों का विश्लेषण थीमेटिक विश्लेषण पद्धति द्वारा किया गया, जिसके अंतर्गत समान प्रकृति के विचारों को समूहित कर प्रमुख प्रवृत्तियों की पहचान की गई।

4 परिणाम

कार्यान्वयन की स्थिति का स्तर निर्धारण

इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की वास्तविक स्थिति को केवल राज्यवार अंतर के आधार पर नहीं, बल्कि उसके गुणात्मक स्तर (निम्न, मध्यम अथवा उच्च) के आधार पर भी समझना आवश्यक था। इस उद्देश्य से छात्राध्यापक एवं शिक्षक प्रश्नावलियों के समग्र स्कोर के लिए संभावित न्यूनतम एवं अधिकतम स्कोर निर्धारित कर उन्हें तीन स्तरों में वर्गीकृत किया गया।

सारणी 2

इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति निर्धारण हेतु स्कोर-रेंज की व्याख्या

अभिधारक	कुल कथन	न्यूनतम स्कोर	अधिकतम स्कोर	निम्न स्तर	मध्यम स्तर	उच्च स्तर
छात्राध्यापक	22	22	110	22.51	52ह81	82.110
शिक्षक	15	15	75	15.35	36.55	56.75

(क) छात्राध्यापक स्तर : राजस्थान का समग्र मध्यमान स्कोर 68.4 तथा दिल्ली का 71.2 पाया गया। दोनों स्कोर 52-81 की सीमा में आते हैं, अतः दोनों राज्यों में कार्यान्वयन की स्थिति मध्यम स्तर पर पाई गई। हालाँकि दिल्ली का मध्यमान राजस्थान से अधिक है, किंतु स्तर निर्धारण के आधार पर दोनों राज्यों को समान श्रेणी में रखा गया।

(ख) शिक्षक स्तर : राजस्थान का समग्र मध्यमान 70.6 तथा दिल्ली का 74.1 पाया गया। ये दोनों स्कोर 56-75 की सीमा में आते हैं, अतः शिक्षक दृष्टिकोण से भी दोनों राज्यों में कार्यान्वयन की स्थिति उच्च स्तर पर पाई गई।

इससे यह संकेत मिलता है कि विद्यालयीय दृष्टि से कार्यक्रम को अधिक संगठित एवं प्रभावी माना गया।

(ग) प्राचार्य स्तर : प्राचार्य साक्षात्कार से प्राप्त दत्तों का विश्लेषण प्रतिशत-आधारित थीमेटिक वर्गीकरण द्वारा किया गया। अधिकांश प्रमुख थीमों (योजना, समन्वय, संसाधन, प्रशासनिक नियंत्रण) में 60 प्रतिशत से अधिक सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं।

अतः प्राचार्य दृष्टिकोण से दोनों राज्यों में कार्यान्वयन की स्थिति को मध्यम से उच्च स्तर के बीच स्थित पाया गया। दिल्ली में औपचारिकता एवं प्रशासनिक संरचना अधिक स्पष्ट रही, जबकि राजस्थान में परिस्थितिजन्य लचीलापन प्रमुख विशेषता के रूप में सामने आया।

राज्यवार तुलनात्मक परीक्षण

स्थिति-स्तर निर्धारण के पश्चात यह जाँचा गया कि राजस्थान एवं दिल्ली के बीच प्राप्त अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है या नहीं।

सारणी 3

समग्र स्कोर का राज्यवार मध्यमान, मानक विचलन एवं t-परीक्षण परिणाम

अभिधारक	राज्य	N	मध्यमान	मानक विचलन	df	t-मान	निष्कर्ष
छात्राध्यापक	राजस्थान	160	68.4	8.6	318	2.71	सार्थक अंतर
	दिल्ली	160	71.2	7.9			
शिक्षक	राजस्थान	150	70.6	8.1	298	3.04	सार्थक अंतर
	दिल्ली	150	74.1	7.4			

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि :

- छात्राध्यापक स्तर पर t-मान 2.71 पाया गयाए जो 0.05 स्तर पर सार्थक है।
- शिक्षक स्तर पर t-मान 3.04 पाया गयाए जो भी 0.05 स्तर पर सार्थक है।
- अतः दोनों स्तरों पर राज्यवार अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक सिद्ध हुआ।
- प्राचार्य स्तर पर गुणात्मक तुलनात्मक विश्लेषण से भी योजना की औपचारिकता, समन्वय की नियमितता तथा संसाधन-संगठन में प्रवृत्तिगत अंतर स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ।

समेकित परिणाम

समग्र विश्लेषण से निम्न प्रमुख निष्कर्ष सामने आए :

1 छात्राध्यापक दृष्टिकोण से दोनों राज्यों में कार्यान्वयन की स्थिति मध्यम स्तर पर पाई गई।

2 शिक्षक दृष्टिकोण से स्थिति उच्च स्तर पर पाई गई।

3 प्राचार्य दृष्टिकोण से स्थिति मध्यम से उच्च के मध्य स्थित पाई गई।

4 यद्यपि स्तर निर्धारण के आधार पर दोनों राज्य कई मामलों में समान श्रेणी में आते हैं तथापि तुलनात्मक परीक्षण से यह स्पष्ट हुआ कि दिल्ली की स्थिति सांख्यिकीय रूप से राजस्थान की तुलना में अधिक सुदृढ़ पाई गई।

5 शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान एवं दिल्ली में संचालित दो वर्षीय बी.एड. इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति का बहु-अभिधारक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना तथा दोनों राज्यों के मध्य तुलनात्मक अंतर का परीक्षण करना था। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि दोनों राज्यों में इंटर्नशिप

कार्यक्रम का कार्यान्वयन समग्र रूप से संतोषजनक से उच्च स्तर के मध्य स्थित है, किंतु संरचनात्मक सुदृढ़ता, प्रशासनिक स्पष्टता एवं समन्वय की नियमितता के संदर्भ में राज्यवार अंतर विद्यमान है।

छात्राध्यापक दृष्टिकोण से प्राप्त मध्यम स्तर यह संकेत करता है कि कार्यक्रम के प्रमुख घटक : प्री-इंटर्नशिप तैयारी, शिक्षण-अभ्यास, पर्यवेक्षण, दस्तावेज़ीकरण एवं मूल्यांकन कार्यशील अवस्था में हैं, किंतु उनमें परिष्करण की संभावनाएँ भी विद्यमान हैं। विशेष रूप से समय-प्रबंधन, दस्तावेज़ीकरण भार तथा फीडबैक की स्पष्टता जैसे आयामों में सुधार की आवश्यकता परिलक्षित हुई। इससे यह स्पष्ट होता है कि कार्यक्रम का ढाँचा स्थापित है, परन्तु उसकी क्रियान्वयन-गुणवत्ता को और व्यवस्थित करने की आवश्यकता है।

शिक्षक दृष्टिकोण से प्राप्त उच्च स्तर इस तथ्य की पुष्टि करता है कि विद्यालयीय प्रणाली इंटर्नशिप को एक संरचित शैक्षिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार कर चुकी है। निरीक्षण, मार्गदर्शन एवं विद्यालय-समन्वय को अपेक्षाकृत सकारात्मक रूप में अनुभव किया गया। यह इंगित करता है कि विद्यालय स्तर पर कार्यक्रम का संस्थानीकरण अपेक्षाकृत सुदृढ़ है।

प्राचार्य स्तर पर उभरी प्रवृत्तियाँ इस विश्लेषण को एक प्रशासनिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करती हैं। दिल्ली में योजना की औपचारिकता, संप्रेषण की नियमितता तथा संसाधनों की उपलब्धता अधिक संगठित रूप में सामने आई, जबकि राजस्थान में परिस्थितिजन्य लचीलापन प्रमुख विशेषता के रूप में उभरा। यह अंतर मात्र संख्यात्मक नहीं, बल्कि संरचनात्मक एवं प्रक्रियात्मक प्रकृति का है।

सांख्यिकीय परीक्षणों द्वारा प्राप्त सार्थक ज-मान यह संकेत करते हैं कि राज्यवार अंतर केवल अनुभवजन्य नहीं, बल्कि विश्लेषणात्मक रूप से पुष्ट है। तथापि यह भी ध्यान देने योग्य है कि दोनों राज्यों में स्थिति निम्न स्तर पर नहींए बल्कि मध्यम से उच्च स्तर के बीच स्थित है। अतः यह अध्ययन सुधार की आवश्यकता का संकेत देता है, न कि विफलता का।

समेकित रूप से देखा जाए तो इंटर्नशिप कार्यक्रम दोनों राज्यों में क्रियाशील एवं संरचनात्मक रूप से स्थापित है, परन्तु प्रशासनिक एकरूपता, संसाधन-समता तथा समन्वय की निरंतरता के आयामों में राज्यवार भिन्नता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। यही भिन्नता तुलनात्मक सार्थकता का आधार बनती है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष केवल तुलनात्मक अंतर को रेखांकित नहीं करते, बल्कि शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता उन्नयन हेतु व्यावहारिक संकेत भी प्रदान करते हैं। इंटर्नशिप कार्यक्रम शिक्षक-शिक्षा का केन्द्रीय घटक है, अतः इसके कार्यान्वयन की गुणवत्ता सीधे भावी शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता को प्रभावित करती है। इस अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख शैक्षिक निहितार्थ उभरकर सामने आते हैं :

पूर्व-इंटर्नशिप तैयारी का संस्थानीकरण

प्री-इंटर्नशिप तैयारी को केवल औपचारिक ओरिएंटेशन तक सीमित न रखकर उसे संरचित, गतिविधि-आधारित एवं परिणामोन्मुख बनाया जाना चाहिए। स्पष्ट अपेक्षाएँ, भूमिकाओं का लिखित निर्धारण तथा मूल्यांकन मानदंडों की पूर्व जानकारी छात्राध्यापकों की तैयारी को अधिक सुदृढ़ कर सकती है।

विद्यालय-महाविद्यालय समन्वय की संरचनात्मक सुदृढ़ता

अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि समन्वय की नियमितता कार्यक्रम की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। अतः एक औपचारिक समन्वय तंत्र विकसित किया जाना चाहिए, जिसमें :

- पूर्व-निर्धारित समय-सारिणी
- स्पष्ट संप्रेषण चैनल
- भूमिका-निर्धारण दस्तावेज़
- समस्या-निवारण तंत्र
- इत्यादि सम्मिलित हों।

पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन की गुणवत्ता में सुधार

नियमित निरीक्षण मात्र पर्याप्त नहीं है, उसकी गुणवत्ता एवं व्यवहारिक उपयोगिता भी महत्वपूर्ण है। मेंटर-शिक्षकों एवं पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें सहयोगात्मक मार्गदर्शक की भूमिका में सुदृढ़ किया जाना चाहिए। फीडबैक को संरचित, समयबद्ध एवं सुधारात्मक स्वरूप में विकसित किया जाना चाहिए।

दस्तावेज़ीकरण एवं शिक्षण-अभ्यास के बीच संतुलन

अध्ययन संकेत करता है कि अत्यधिक अभिलेखीय कार्य शिक्षण-अभ्यास की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। अतः दस्तावेज़ीकरण को यथार्थपरक, उद्देश्यपरक एवं संक्षिप्त बनाया जाना चाहिए, ताकि छात्राध्यापक का ध्यान वास्तविक शिक्षण अनुभव पर केंद्रित रह सके।

मूल्यांकन प्रक्रिया की पारदर्शिता एवं एकरूपता

मूल्यांकन मानदंडों की स्पष्टता और एकरूपता कार्यक्रम की विश्वसनीयता को सुदृढ़ करती है। राज्य स्तर पर एक मानकीकृत मूल्यांकन रूपरेखा विकसित कर उसे सभी संबद्ध संस्थानों में समान रूप से लागू किया जाना उपयुक्त होगा।

प्रशासनिक संरचना एवं संसाधन-समता

संसाधनों की समान उपलब्धता एवं प्रशासनिक स्पष्टता कार्यक्रम की स्थिरता को प्रभावित करती है। राज्यवार भिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए संसाधनवितरण एवं निगरानी तंत्र को अधिक संतुलित एवं पारदर्शी बनाया जाना चाहिए।

समग्र रूप से यह अध्ययन संकेत देता है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम की मूल संरचना सुदृढ़ है, किंतु उसकी प्रभावशीलता को और उन्नत करने के लिए संरचनात्मक स्पष्टता, समन्वय की नियमितता तथा मार्गदर्शन की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि इन निहितार्थों को नीति एवं व्यवहार स्तर पर रूपांतरित किया जाएए तो शिक्षक.शिक्षा की गुणवत्ता में दीर्घकालिक सुधार संभव है।

उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान एवं दिल्ली में संचालित दो वर्षीय बी.एड. इंटर्नशिप कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति का बहु-अभिधारक दृष्टिकोण से विश्लेषण एवं तुलनात्मक परीक्षण करना था। छात्राध्यापक, शिक्षक तथा प्राचार्य : तीनों स्तरों से प्राप्त दत्तों के समेकित विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि दोनों राज्यों में इंटर्नशिप कार्यक्रम संरचनात्मक रूप से स्थापित एवं कार्यशील है तथा इसे शिक्षक-शिक्षा का अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। प्री-इंटर्नशिप तैयारी, शिक्षण-अभ्यास,

विद्यालयीय सहभागिता, पर्यवेक्षण, दस्तावेज़ीकरण तथा मूल्यांकन : सभी आयामों में कार्यक्रम की स्थिति औसत से ऊपर पाई गई।

तथापि तुलनात्मक परीक्षण से यह स्थापित हुआ कि कार्यान्वयन की गुणवत्ता, प्रशासनिक संरचना, समन्वय की नियमितता तथा संसाधनों की उपलब्धता के संदर्भ में दोनों राज्यों के बीच सार्थक अंतर विद्यमान है। छात्राध्यापक एवं शिक्षक : दोनों स्तरों पर समग्र मध्यमान स्कोरों में अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गयाए जबकि प्राचार्य आधारित थीमेटिक विश्लेषण ने भी प्रक्रियात्मक भिन्नताओं की पुष्टि की। दिल्ली में कार्यान्वयन अपेक्षाकृत अधिक संरचित, समयबद्ध एवं प्रशासनिक रूप से नियंत्रित परिलक्षित हुआए जबकि राजस्थान में परिस्थितिजन्य लचीलेपन की प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट रही।

इस प्रकार अध्ययन यह संकेत देता है कि इंटर्नशिप कार्यक्रम की मूल रूपरेखा प्रभावी है, परंतु उसकी कार्यान्वयन गुणवत्ता राज्यीय संदर्भों से प्रभावित होती है। अतः शिक्षक-शिक्षा की गुणवत्ता सुदृढ़ करने हेतु समन्वित नीति, स्पष्ट मानदंड एवं संतुलित संसाधन-वितरण की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन बहु-अभिधारक दृष्टिकोण के माध्यम से इंटर्नशिप कार्यक्रम की वस्तुस्थिति को प्रमाणित करता है तथा तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में इसके सुधार की दिशा स्पष्ट करता है।

संदर्भ ग्रन्थ

- *Choudhary. (2022). Institutional implementation challenges in teacher education internship. Indian Journal of Educational Administration, 14(2), 55-70.*
- *Government of India. (2012). Report of the high-powered commission on teacher education (Justice J. S. Verma Commission Report). Ministry of Human Resource Development.*
- *Government of India. (2020). National education policy 2020. Ministry of Education. https://www.education.gov.in/nep2020*
- *Jargar, & Hussain. (2023). Stakeholders' perception towards B.Ed. internship programme. Indian Journal of Teacher Education, 9(1), 67-79.*
- *Jha. (2021). Quality dimensions of teacher internship under NCTE framework. Educational Review Quarterly, 28(3), 112-126.*
- *Kumar, & Thapa. (2018). Evaluation practices in teacher internship programmes. Educational Perspectives, 22(1), 41-56.*
- *Longchar. (2022). Institutional coordination and internship effectiveness in teacher education. Journal of Educational Planning and Administration, 36(1), 89-104.*
- *Ministry of Education. (2023). All India survey on higher education 2021-22. Government of India. http://aishe.gov.in*
- *National Council for Educational Research and Training. (2005). National curriculum framework 2005. NCERT.*
- *National Council for Educational Research and Training. (2008). Implementation of two-year B.Ed. programme in Regional Institutes of Education. NCERT.*
- *National Council for Teacher Education. (2009). National curriculum framework for teacher education. NCTE.*

- *National Council for Teacher Education. (2014). Norms and standards for bachelor of education programme. NCTE.*
- *National Council for Teacher Education. (2016). School internship: Framework and guidelines. https://ncte-india.org*
- *Thomas. (2012). Role of supervision in enhancing teaching practice. Teaching and Teacher Education Review, 18(4), 233-247.*
- *University of Wisconsin-Madison. (n.d.). Internship definition. http://www.wisc.edu*